International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 15 Issue 01, January 2025,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

उषा प्रियंवदा के उपन्यासों में साहित्य और सस्कृति के आयाम

सुमन
शोध छात्र, हिंदी
सोबन सिंह जीना विश्वविद्यालय, अल्मोड़ा
ईमले : khersuman22@gmail.com

सारांश

साहित्य और संस्कृति का अटूट संबंधं होता है। दोनों एक दूसरे के पूरक होते हैं। किसी एक का अस्तित्व दूसरे के बिना संभव नहीं है।साहित्य और संस्कृति में अन्तसबं ध है। साहित्य समाज का दर्पण है। और समाज का निर्माण सस्कृति से होता है।साहित्य यदि ज्ञान का संचित शब्द कोश या प्रतिबिंब है,तो संस्कृति मनुष्य के उस ज्ञानात्मक व संस्कृति चेतना का पर्याप्त है। साहित्य का संबंध ह्दय ,मन राग या भाव से जिसका` भाव का वाड्मय भी कहा जाता है। जिसक` अन्तगर्त कहानी,नाटक,कविता,निबन्ध, स्माकर साहित्य, उपन्यास साहित्य आदि साहित्यिक विधाए ं आती है। साहित्य सार्वकालिक एंव सार्वभौतिक विशेषताओं से युक्त मानी जाती है। कुछ विद्वानों ने संस्कृति की परिभाष इस प्रकार से की –''साहित्य शब्द का समुचित अर्थ है'साथ धारण करने वाला' इसीलिए कहा गया है–''सहितस्य भावम्साहित्य।[1] संस्कृति के विषय में कहाहै।''संस्कृति शब्द 'सम्' उपसर्ग में 'कृ'धातु में सुट् आगम पूर्वक 'क्तिन्' प्रत्यय के यागे से निष्पन्न हुआ है। इसका मलू अर्थ 'साफ' या परिष्कृत करना है ।''[2] डॉ नेगेन्द के अनुसार–संस्कृति का स्वरूप अपक्षे ाकृत अधिक सक्ू म एव ं जटिल है।सामान्य अर्थ संस्कृत अवस्था का नाम ही संस्कृति है''3डॉ भगीरथ ने काव्यशास्त्र मे ं कहा है।'''साहित्य मनुष्य के अनुभव और ज्ञान का वह रूपहै जा` लिपिबद्व हाके र हमारे सामने आता है,या सुरक्षित रहता है।4''

मलू शब्द–साहित्य ,संस्कृति,
परम्पराएँ,रीति–रिवाज,खानपान,आदि।

प्रस्तावना– साहित्य संस्कृति की विधि है।साहित्य मनुष्य की भाषा की पहचान है। जिसका जीवन में बहुत बड़ा महत्व है।संस्कृति मानव की संभ्यता,रीति–रिवाज,परम्पराए,खान–पान आदि संस्कृति के अन्तर्गत आते हैजा` मनुष्य को अपने पूर्वजो ं से विरासत मे ं मिली होती है।जा`पीढ़ी दर पीढ़ी निरंतर परम्रागत चलती रहती हैऔर साहित्य उस` उकेरता हुआ चलता है। जिन्हे ं वह अपने जीवन पर्यन्त अच्छे–बुर` वक्त में निभाता रहता है।साहित्य संस्कृति का ही वाहक है। साहित्य में ही संस्कृति की झॉकी अपने पूर्वतों वैभव के साथ चित्रित होती है।किसी भी देश या धर्म उसके साहित्य का` अपने विचार और भावनाओं के इतिहास का परिचय देता रहता है। जिस पर डॉ सरनाम सिंह का ने–'''साहित्य का` संस्कृति का इतिहास कहकर उसे अतीत का प्रतिबिंब तथा अनागत का पद्र ीप माना है।''[5] इसी तरह की संस्कृति हम उषा जी के उपन्यासो ं में देखने का` मिलती है।उषा प्रियंवदा स्वंय एक लेखिका है।जो कभी भारत की भूमि में ता` कभी पाश्चात्य देश में रहते हुए भी अपनी संस्कृति को निर्वाह हुई नजर आती है। एक लेखिका के लिए यह उसका सौभाग्य हैवर्षो से एक प्रवासी की तरह अपना जीवन जीती है।इन्होने अपने उपन्यास साहित्य में विभिन्न संस्कृति के आयामों का प्रयागे किया हे।जैसे,रहन–सहन खानपान,रीति–रिवाजआदि। मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है।समाज में रहकर ही वह अपने पूर्वजों द्वारा दिए गए रीति रिवाज को सीखता रहता है। समाज में रहकर ही वह रीति रिवाज आदि का निर्वाह करता है।चाह` दहजे लेने–देने, का रिवाज,नामकरण,विवाह रिवाज,आदि किसी भी प्रकार का रिवाज क्यो ं न हो।है।।उषा जी का' पचपन खम्भ` लाल दीवारे'की सुषमा मध्यवर्गीय परिवार से है परिवार का सारा बाझे अपने ऊपर लेकर चलने वाली नारी है। विवाह की चाहना सुषमा

ने भी कि थी,लेकिन यह चाह उसके अन्दर ही रह जाती है।नारायण की मॉ वकीलन को ता` सुषमा बहुत पंसद थी,लेकिन नारायण के पिता का` यह रिश्ता मजं ूर नहीं था। दहजे के कारण सुषमा का विवाह नाारायण के साथ नहीं होता है।वकील साहब अपने बटे` के विवाह के लिए अपनी ही हैसियत के बराबर का रिश्ता मिल जाता हैआरै ऐसी लड़की के साथ कर देते हैं जा` देखने भालने में सुंदर नहीं थी लेकिन दहेज से पूरा घर आगॅ न भर जाता है।उसके पिता सिविल सर्जन थे। वही परिवार की हालत दयनीय स्थिति होने के कारण सुषमा का विवाह नहीं होता हैअथवा या सुषमा विवाह करना ही नहीं चाहती है।मॉ दुल्हन को देखकर आती हअै ैर कहती है–''जिसका जहॉ,जिससे संजोए जुड़ा होता वही होता है।''[6]आज भी हमारे समाज मे ं दहजे लेने देने की परम्पराये ं सदियों से चली आ रही हैं जिसके कारण नारी अपने जीवन का` उन्ही ं चार दीवारे ं मे ं बन्द करके रखना चाहती है 'रूकागे ी नहीं राधिका'की राधिका जब बाल्यवस्था म` थी तभी राधिका की मॉ की मृत्य ु हो गई थी,और वह पिता के करीब आ गई थी।लेकिन अपने अकेलेपन के कारण उसके पिता विद्या से विवाह कर अपना नया जीवन शुरू करते है। परन्तु पिता का दूसरे विवाह के कारण राधिका घर छोड कर डैन नामक व्यक्ति के साथ पाश्चात्य देश चली आती है।दाने ा` में एक साल बाद अनबन होने के कारण वह राधिका का` चले जाने को कहता है। लेकिन अपनी सभ्यता वह संस्कृति का` ध्यान मे ं रखकर वह राधिका से कहता है। ''क्योंकि कि तुम ने एक क्षण के लिए भी प्याार नही किया राधिका तुम मुझमें अपना पिता ढूॅढ रही थी,वही ं पिता जिसे त्रास देने के लिए तुम मरे` साथ चली आयी थी, पर मैंने मुम्हारे पिता की जगह स्थपित नही ं होना चाहा,मैं तो स्वंतत्र व्यक्तित्व हूॅ।''[7] भारतीय समाज में अक्सर यह देखा जाताहै। कि जैसे ही लड़की बड़ी हुइॅ नही।परिवार वाला`की चिन्ता बढ़नी ही लगती है। इसी उपन्यास मे ं राधिका जब अपने देश लौटकर आती है। ता` उससे सब कुछ बदला सा लगता है। भाई ससुराल मे ं खूब पैसा कमा रह है। राधिका कुछ दिन के लिए अपने परिवार वालों के साथ पुरानी काठे ी में रहती हैं राधिका के बड़` होने पर उसके घर वाले उसके विवाह की बात करते है। जा` राधिका को अच्छी नहीं लगती है ''जो आप चाहते हैंवही हमेशा क्यों हो?क्या मेरी इच्छा कुछ भी नहीं हैं?मैं आपकी बटे ी हूॅ वह ठीक है,पर अब मैंबडी ही चुकी हूॅ और मैं जो चाहूॅगी वही करूगीं।''[8]

'शेषयात्रा'' उपन्यास की डौली का` देखने के लिए विलायत से प्रणव कुमार आता है। लेकिन प्रणव का` पड़ासे न की अनु पसंद आ जाती है।अनु मध्यवर्गीय परिवार की एक सीधी सादी लड़की है।जिसक ` ना मॉ–बाप नहीं है।नैनिहाल में ही पली पढ़ी है।बी0एस0सी की छात्राहै।जिसकी अपनी पसंद ना पसंद कुछ भी नहींहै।लेकिन किस्मत को कुछ और ही पस्न ंद था, प्रणव का` अनु प्रसंद आ जाती है। वह अनु की सुंदरता और सादगी पर मोहित हो जाता है।अनु की प्रसंद ना प्रसंद का कोई जबाब नहीं अनु के चारों और तूफान सा आ जाता है। अनु को कुछ नहीं पता, वह चुप बठै ी है।सास आरै चारा ` बहने ं आधियों कि तरह जुट जाती है।''तुमने एक लड़की का उद्वार कर दिया बिटू भइय। क्या है, इनम` जा` इत्त` आसिक हो गए। बिच्छू की तरह डस लिया भइए का क्यो ं भाभी? मतं र आता है? अनु चुपचाप बैठी है।''स्टेशन से टैक्सी मे ं किसी अज्ञात दिशा की ओर जा रह` है। उसकी शादी हो गई है। प्रणव के साथ वह विलायत जा रही है। सारा गहना कपडा लत्ता बड़ी लल्ली –अब सास ने सहज लिया है। वहॉ क्या करेगी बड़ी लल्ली सुनना कर कहती है,''वहॉ बटे ू फराक पहनाएंग– बहतु शाके स` बियाह कर लाए है,तभी'[9]

भारतीय समाज कई तरह के रिवाज होते है। जैसे लड़के वाले लड़की को किसी विशेष उत्सव में देखाने का भी रिवाज है। 'अन्तर्वशी'उपन्यास की बनारस चनु मनु का` देखने के लिए विलायत से आये शिवश े ा जब अपने मित्र राहुल के साथ वनश्री का` देखते ही वह उस` पसंद कर लेता है।''छुटकी ने उछलते हुए कहा था

''ददिया देख! देख ले न खिड़की से !अपना दुहला।''खाना–पीना रिश्तेदारी मे ं हुआ था, वहीं जहॉ शादी में शिवश े ा की बहन ने चुनमनु का` देखा था और वही प्रसंद भी कर लिया था ।चुनमनु भलू गई थी कि शिवश े ा का` आने में देर लगी थी।साल ड़ेढ़ साल ।चुन्नी बुआ उसे फिर किसी रिश्तेदारी मे ं ले गई थी, किसी 'कारज'मे ं ।भीड़–भड़क्के' गपढ़चौथ में शिवश े ा ने चुनमुन सारी शाम रात देर तक और मामियों और बहनो ं के साथ काम में व्यस्त रही थी। अपने भविष्य की दिशा के बारे में अनभिज्ञ, छुटकी ने उस` धक्का दिया था, चुनमुन ने बाहर झॉका,नीचे धरवालों की गाड़ी खड़ी थी, उसका हरा दरवाजा खुला था, उसके पास ही पिताजी खड़े थ। चुनमनु ने राहुल की एक झलक देखी –लम्बा कद सौम्य चहे रा ।दरवाजा बन्द हुआ और शायद उधर से प्रणाम के उत्तर में पिता जी ने

अपने गभ ीर,मृदुर स्वर में कहा ''यशस्वी भव''।[10] इसी उपन्यास में यह रिवाज भी देखा गया है। कि जब दुल्हन अपने सासुराल आती है। ता मुहॅ दिखाने की भी परम्पराये होती है।'अन्तर्वशीं'उपन्यास की देवप्रिया एक तलाकशदु ा नारी है। जा चाची का अच्छी लगती है। चाची के कहने पर ही वह देवप्रिया से विवाह करने का राजी होता है–''राहुल की बहन बबे ी राई नाने की रस्म में जड़ाउ ठुसी मॉग रही है। वही,जा चाची ने राहुल की दुल्हन के नाम पर सहेज रक्खी ह ै और दुल्हन को ही मुॅह दिखाई में देगी,चाहे वह पने या नही।''[11]

भारतीय संस्कति के अनुसार हर मॉ–बाप का एक सपना होता हैकि अपने बच्चो का विवाह एसे लड़के साथ हो जा उस जिन्दगी भर खुश रख।यही सब बात 'भयाकबिरा उदास'की लिली की मॉ सौंदर्यजात से परिपणू ा है। यमन अपनी बटे ी के कैंसर की बात जानते हुए भी उसकी खुशी के लिए उसका विवाह वनमाली के साथ करने का राजी हो जाती है। वनमाली यमन के सारे दुःखों साथ, रीति परम्पराओ के सथ विवाह करने का तैयार होता है।''हम इस बिन्दु पर आकर ठहर नहीं सकते,यमन चला तुम एक साडी खरीद लो और आज शाम का ही शत्रुहन हमारा विवाह कर देगं े मैं अब,इस कैंसर यात्रा में तुम्हारे साथ रहना चाहता हूॅ।'[12]

''अल्पविराम'की नायिका उच्चकुल की पुत्री शिजिनी एक एसे परिवारिक परिवार की बटे ी है जिसमें उस जा कुछ भी करना है।उसे परिवार के दायरे में रह कर करना हैअपनी मर्जी से कुछ भी नहीं,जब पिता शिजिनी के लिए उसी के यागे के याग े य लड़का ढूॅढते हैं।जो उन्हे पसंद है।,उसका का विवाह अच्छे घर मे तय कर दिया जाता है,वह कहती है–''मरे ी पसंद क्या है।यह किसी ने पूछना भी जरूरी नहीं समझा, मरे ी अपनी जिंदगी का कर दिया गया मोल,बस कुछ भारतीय सस्कृति रीति रिवाज के अनुसार मरे ी फोटा देखकर ही प्रसन्द कर लिया था।''लडक के पिता इलाहाबाद यूनिवर्सिटी मे रीडर रह थे, अब दिवंगत हो चुके थे, पढी–लिखी सम्भ्रान्त माँ थी दो छोटी बहने माँ ने बटे का पूरा पूरा मोल ऑका था, और पापा जा उसे देने में समर्थ थे, राजी हो गए थे, पापा ने ठीक समझा और – ''इकयाइन गिन्नयों से टीकाकर आए।द्वाराचार पर एक सौ एक और न जाने कितने ताले के आभूषण जिसमें कमर की तगडी अनिवार्य थी।[13]''जिस पर भाभी बोलती है, ''जो बिध ा गया सा मोती'' भारतीय संस्कृति के अनुसार यह भी देखा गया है। कि जब बारात वापस आती है, तो सभी लागे ों दहजे को दख कर खुशी होती है।।

भारतीय समाज में देखा जाता हैंकि लड़की की प्रसंद न प्रसंद का काइ ं खायल नहीं, बस विवाह कर दिया जाती है।उस देश में जहाँ उसका अपना काइ ं नहीं होता है।सदियों से चली आ रही,देहज लेने –देने की परम्परा,जा हम उषा प्रियंवदा के 'अल्पविराम'उपन्यास में देखते है।उपन्यास की नायिका शिजिनी के पिता देहज में सब कुछ देने की बात करते है।पिता आए दिन लड़के की खाजे में लग रहते है।ओर जब लड़की परिवार वाले का जब लडका पसंद आ जाता है।तो उसे अपनाने के लिए शगुन दिया जाता है,और जब बारात द्वार पर आ जाती है,तब भी भेंट दिया जाता है शिजिनी के पिता उच्च सम्पन्न व्यक्ति होने के कारण दहजे में सभी कुछ देते हैं,।शंजिनी की माँ कहती हैंलड़के वाल भी अच्छे घराने के हाने चाहिए । ''चांदी के थालो मे मेवे के दर्जनों गिलास पूरा घर पयृ जाए, इतना सामान, सास बहे द प्रसन्न बार–बार बलाए ले''आरै जब बारात वापस जाती है,तो ससुराल के रीति रिवाज पर शिजिनी कुछ इस पक्र ार के रिवाज का देखती है।'',पैर धुलाई मुॅह दिखाई, फलू ों की छडी स सास की पिटाई,''बस हुआ भर दो''''[14]

भारतीय समाज मे कुछ एसे ी पराम्पराये भी होती हैं जब कोई अच्छे काम के लिए घर से बाहर जाते है।उन्हें शकुन के तौर पर कुछ मीठा,या दही खिलाया जाता हैजिसे वह काम सफल हो सके। 'इसी उपन्यास की नायिका शिजिनी और नायक अपने हनीमनू के लिए बौस्टन जाने के लिए तैयार होते है ता–विचित्रा मौसी,मामी,रेचना और बड़की भौजी ने एयरपोर्ट पर ही सभी के सामने–''राले ी–चावल का टीका किया,दही–शक्कर खिलाया कहा,बमभाले ा,जल्दी ही लाटै ना,वहीं के मत हो जाना।''[15] भारतीय संस्कृति के अनुसार कुछ रीति रिवाज एसे भी होते है जैसे विवाह हाने से पहले लड़का लड़की में काइ ं दोष ना हो इस लिए दोनों की कुंडली दिखाई जाती है। आरै शास्त्र के अनुसार काफी हद तक दोना की कुन्डली योग बराबर ही होते है। एसे ा ही उषा प्रियंवदा के 'अल्पविराम' उपन्यास में जब शिंजिनी अपने ससुराल और जेठानी अपने विवाह की कुछ बाते देवरानी शिजिनी का बताती है। जब तुम्हारे जेठ हमें देखने के लिए आए, ता वह पूरे 36योग जा एक विवाह में होने चाहिए थे जिस पर तुम्हारे जेठ कहते है। एकदम मले खाती जाडे ी है।जा देखता

कहता –''शिव–पार्वती स्वरुप''16 नायिका शिंजिनी भारतीय संस्कार में पली बढ़ी होने के कारण जहाँ माँ और पिता की आज्ञा का पालन करने वाली नारी है।इसी लिए जब पिता ने विवाह के लिए वर ढ़ूंढ़ू वह अपने संस्कारी माँ की बटेी होने के कारण कुछ नहीं बोलती है भारतीय संस्कार में पली, पिता ने जैसा वर ढ़ूँढ उसी का अपना लिया लड़का गौरा हं या काला इसका काइे महत्व नहीं है।उषा जी यह उपन्यास भारतीय परम्पारओ मे लिखा गया है। जैसा घर के बड़ा ने लड़का देखा,उसी से विवाह करना है।उसके सामने बैठने वाला में पति कौन है।उस पता नहीं है। बस उसी का लेकर पूरी जिंदगी जीना है। नायिका की माँ अपनी बटेी के विवाह सस्ंकार के समय मे कुछ रीति–रिवाज गीत के द्वारा बताती हःै–

''कौन रंग मुँगवा–कवन रंग
मोतिया हो कौन रंग,
ननदी
तारे बिरना........।''17

खानपान–

खानपान मनुष्य का एक महत्वपणूर् अंग है। इसका संबधं ा संस्कृति से ही माना जाता है। खानपान का किसी भी देश की संस्कुति से उसके रहन–सहन,वेश–भ्षूा से माना जाता है। **यही सब उषा** जी का 'रूकागेी नहीं राधिका' की राधिका जब अपने भारत का लौटती है, राधिका वह सोचती है, कि इस दिन कल्पना उसने सोची, कि यदि विद्या परिवार को कोई भी सदस्य नही पर पापा उसे अच्छा सा भोजन करायेंगे वह खाने क लिए एसेी चीजों का ऑर्डर करेगी जा वह प्रवास जीवन में खाने के लिए तरस रही थी। जैसे ''खूब फलूी हुई कुरकुरी पूरिया, काबुली चनो की मसालेदार तरकारी जिस पर हरी मिर्च और नीबू के लम्बे–लम्बे टुकडे सजे हो, पनीर काफे ते , दही में डुबी गुझिए, चटनी सब तरह के अचार, मिर्च वाले पापड़ और अन्त में मेवे छिड़का हुआ गाजर का हलवा या ताजे कटे आमों की फाकं और मलाईया केसर से सुगन्धित खूब गादी खीर''18। 'नदी''उपन्यास की नायिका गंगा जब अपनी सुवासिनी जीजी के वहा वाशिगटं न जाती है, तब सुवासिनी जीजी ने उसका स्वागत इस प्रकार से करती है उसकी देखभाल की और राजे ताजा खाना बनाती थी,''कभी कद्दू, कभी करेला कभी मूंग की दाल की पकौडियां की तरकार।वह साथ में कटहल आम और करौदो के अचार भी लाई थी''19भारतीय सस्ंकृति के अनुसार भारत हो या विदेश अपने खाने पीने में **विशेष** ध्यान दिया जाता है,

उषा जी के अन्य उपन्यास की तरह 'भया कबिरा उदास'' की नारी के अमेरिका में गुजरती जिन्दगी का ब्यौरा दिया है। **यह** उपन्यास भारतीय विदेषी भूमि पर निर्भर है, भारतीय और विदेशी परिवेश का बडी बरीकी से अंकन किया गया है,''रूबी बुआ उन सबमे संपन्न थी, व अपने साथ अपना महाराज लाती थी, ममी की रसोई का नया तला, कम तेल घी का खाना उन्हे नहीं रूचता था, महाराज के साथ मे बोरे के बारे अपने खेत का चावल, गेहू और दाले कनस्तर के कनस्तर असली घी, अपनी गायों–भैसो का महाराज जब लहसन और जीरे का छौंक लगाता तो दूर तक हर घर महक जाता था''20इसी उपन्यास में लेखिका ने गावे ा के बाजार का वर्णन इस पक्र ार से किया है।'धूप की वजह से बाजार में चहल पहल है; बगल मे ही हरे साग–सब्जियो का दुकाने है;आलू, बैंगन, प्याज,कितने सजाकर रक्ख गए है;एक साधरण से साग–सब्बजी बेचने वाले ने कितने श्रम और स्नेह स यह रचना की है। वह हर दुकाने से कुछ–कुछ खदीर लेती है और उसके हाथ तरह–तरह के बैग और बंडलो से थकने लगते है बाजार के अन्त में ताजी मछलियाँ बिक रही है,पर उस अब और कुछ नहीं लेना''21

अन्तर्वर्शी उपन्यास में विश्लेषणात्मक और जीवन शैली के साथ–साथ प्रमुख पात्रों के पूर्व जीवन की झॉकी प्रस्तुत करने के लिए पूर्व दीप्ति शैली को अपनाया गया है।राहुल के प्रथम आने पर बाऊजी ने आग की पढ़ाई के लिए देहरादून वह दिल्ली भजे ना चाहते है।जिस पर चाची तरह–तरह के व्यंजनो का बनाती है–''घुटी हुई अरहड़ की दाल,आलू मटर की तरकारी टीन की छत के नीचे की रसोई मे बने काये लों पर फुलाई गई रोटी की खुशबू चारो तरफ मडरती रहती हैं,'22

'नदी'उपन्यास की नायिका अपने बटे` स्टीवने का` देखकर सब कुछ भूल जाती ह'ै कुछ चिंता नही है।सब कुछ उजड़ जाने से उस`बस इन्तजर है अपने बटे` का` देखने के लिए वह व्याकुल है।उसके लिए कई तरह के भाजे न बनाती है।''अपने खेत की हरी पतियों का सलाद मीठे खीरे,टमाटर,बथुवा का रायता और घुटी हुई खिचड़ी जिसमें खूब सारे जीरे का बधा पतली–पतली कटी और घी में लाल व्याज–पापड़ बिना मिर्च वाले साबूदाने के।''[23]

सन्दर्भ ग्रन्थ

1.उषा प्रियंवदा के कथा साहित्य में युग बाधे ा डॉ.जयश्री बन्हाटे पृ09
2.गुलाब राय,साहित्य और समीक्षा पृ016
3.अशाके कुमार यादवख्कहानीकार महीप सिंह,मानवीय संबंधा` की सचते न सृष्टि से उद्घतृ पृ069–70
4..उषा प्रियंवदा के कथा साहित्य में युग बाधे ा डॉ.जयश्री बन्हाटेपृ010
5.साहित्य सिद्धान्त और समीक्षा,सरनाम सिहे शर्मा पृ019
6.उषा प्रियंवदा,पचपन खम्भे लाल दीवारे ं पृ0 41
7.उषा प्रियंवदा,रूकोगी नहीं राधिका प0ृ 36
8.उषा प्रियंवदा की उपन्यास सृष्टि,डॉ शहनाज़ अकुली चिन्तन प्रकाशन पृ031
9.उषा प्रियंवदा,शेषयात्रा पृ015–16
10.उषा प्रियंवदा,अन्तर्वर्शी'पृ017
11.उषा प्रियंवदा,'अन्तर्वर्शी'पृ0 206
12..उषा प्रियंवदा की उपन्यास सृष्टि,डॉ शहनाज़ अकुली चिन्तन प्रकाशन प0ृ 63
13.उषा प्रियंवदा,अल्पविराम'पृ023
14 उषा प्रियंवदा,अल्पविराम'पृ0 32
15.वही पृ0220
16.वही पृ0137
17.वही पृ0 204
18.उषा प्रियंवदा के कथा साहित्य मे ं युग बाधे ा,डॉ जयश्री बन्हाटे,पृ0 121
19. उषा प्रियंवदा प0ृ 22
20.उषा प्रियंवदा के उपन्यासो ं मे ं झॉकता नारी अन्तमर्न ,पृ041
21.उषा प्रियंवदा,भयाकबिरा उदास,पृ0100
22. उषा प्रियंवदा,'अन्तर्वर्शी'पृ064–112
23.उषा प्रियंवदा के उपन्यासो ं मे ं झॉकता नारी अंतर्मन पृ050